अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2023) दिनांक : 20.12.2023

समय सीमा : 3 घंटा तृतीय वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

बावन बोल–25

प्र. 1 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 10

(क) नौ तत्त्व के एक सौ पन्द्रह बोलों की पृच्छा।

(ख) आठ कर्मों का उदय, उपशम, क्षय, क्षयोपशम निष्पन्न किस-किस गुणस्थान तक? उपशम निष्पन्न भाव से प्रारंभ कर अंत तक लिखें।

(ग) आठ कर्मों का उदय, उपशम, क्षय, क्षयोपशम निष्पन्न छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन?

प्र. 2 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 9

(क) जीव पारिणामिक के दस भेद कितने भाव? कितनी आत्मा?

(ख) आठ आत्मा छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन? तथा मूलगूण कितनी? उत्तर गुण कितनी?

(ग) चौबीस दण्डकों में लेश्या कितनी?

(घ) चौदह गुणस्थान कितने भाव? कितनी आत्मा?

प्र. 3 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) द्रव्य पुण्य, भाव पुण्य कितने भाव? कितनी आत्मा? तथा छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन?

(ख) अजीव के चौदह भेद ऊंचे, नीचे, तिरछे लोक में कितने-कितने?

(ग) आश्रव के बीस बोल कितने भाव? कितनी आत्मा?

(घ) दया हिंसा कितने भाव? कितनी आत्मा? तथा छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन?

इक्कीस द्वार–25

प्र. 4 कोई चार बोल पूरा लिखें– 20

(क) अचरम।

(ख) असंज्ञी।

(ग) चक्षुदर्शनी।

(घ) सम्यक मिथ्या दृष्टि।

(ङ) वेदक सम्यक्त्वी।

(च) मनयोगी।

प्र. 5 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें– 5

(क) अभाषक में–योग व उपयोग।

(ख) वचनयोगी–जीव का भेद, दण्डक।

(ग) क्षयोपशम सम्यक्त्वी–गुणस्थान, भाव।

(घ) सूक्ष्म संपराय–योग व उपयोग।

(ङ) अचक्षुदर्शनी–उपयोग गुणस्थान।

(च) अनाहारक–गुणस्थान व दृष्टि।

(छ) अपर्याप्त–दृष्टि, योग।

जैन तत्त्व प्रवेश (द्वितीय व तृतीय खण्ड)–30

प्र. 6 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 10

(क) व्रताव्रत द्वार को प्रारम्भ से लिखते हुए–दोहों (पद्य) के पहले तक लिखें।

(ख) पुण्य पाप द्वार लिखें।

(ग) श्रावक ने वरतां..... जाणो रे। शील आदरियो.....मांय। नीम आंबादिक.. ..... केम। इन पद्यों को पूर्ण करें।

प्र. 7 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें– 15

(क) दया किसे कहते हैं? प्रथम दो पद्यों को लिखें।

(ख) दृष्टिवाद, मूल व अनुयोग के प्रकार लिखें।

(ग) नय को परिभाषित करते हुए उसके प्रकारों का वर्णन व्यवहार नय तक लिखें।

(घ) कृमि, कौड़ी, जोंक आदि में प्राण, पर्याप्ति व योग लिखें।

(ङ) गुणस्थान को परिभाषित करते हुए 2, 8, 9वें गुणस्थान का वर्णन करें।

(च) श्रावक गुण द्वार लिखें।

प्र. 8 किन्हीं पांच प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 5

(क) प्रमेय किसे कहते हैं?

(ख) निर्वेद का क्या तात्पर्य है?

(ग) प्रेष्य प्रतिमा किसे कहते हैं?

(घ) व्यावहारिक दान किसे कहते हैं?

(ङ) श्रावक का दूसरा विश्राम लिखें।

(च) सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष के प्रकार लिखें।

(छ) अंग बारह हैं। इनको.....या..... भी कहते हैं।

पूर्व कंठस्थ ज्ञान–20

प्र. 9 किन्हीं आठ प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें–(प्रत्येक खण्ड से दो प्रश्नों को हल करें) 8

तत्त्व प्रचेता–पच्चीस बोल

(क) तेरहवां पाप।

(ख) चार कोटि त्याग लिखें।

(ग) चारित्र का दूसरा अर्थ लिखें।

(घ) तत्त्व का अर्थ लिखें।

चतुर्भंगी

(ङ) आत्मा किस कर्म का उदय?

(च) कौन सा द्रव्य कम, कौन सा द्रव्य अधिक?

(छ) किस निर्जरा के जीव कम, किस निर्जरा के जीव अधिक?

पच्चीस बोल की चर्चा–(किसमें व कौन-कौन से)

(ज) ग्यारह गुणस्थान।

(झ) तीन द्रव्य।

(ञ) अठारह दण्डक।

तत्त्व चर्चा–

(ट) पांच समिति छह में कौन? नौ में कौन?

(ठ) पुण्य और धर्मास्तिकाय एक या दो?

(ड) पुण्य छह में कौन? नौ में कौन?

प्र. 10 निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखें– 12

(क) प्रतिक्रमण–शुक्र स्तुति

अथवा

उपभोग परिभोग परिमाण व्रत लिखें।

(ख) जैन तत्त्व प्रवेश–सामान्य गुण को परिभाषित करते हुए उसके भेदों का वर्णन करें।

अथवा

हेय-ज्ञेय-उपादेय द्वार व लोकालोक द्वार लिखें।

(ग) कर्म प्रकृति-मोहनीय कर्म की गुणस्थानों में अवस्थिति।

अथवा

प्रत्येक प्रकृति में तीसरी प्रकृति से अंतिम प्रकृति तक का वर्णन करें।